https://www.mjpruonline.com

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 7

Paper Code : 11207

258

B.A. (Part III) Examination, 2019

(Three-year Degree Course)

(New Course)

SANSKRIT

Paper–III

(अद्यतन संस्कृत साहित्य)

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : 50

नोट :– निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित श्लोकों की व्याख्या कीजिए। प्रत्येक खण्ड से **एक-एक** श्लोक का चयन करना है। प्रत्येक 8

(क) गृहदीप एव गृहं दहेद् भगवन् ! किमत्र विधीयताम् !
ननु मित्रमेव रिपुर्भवेद् भगवन् ! किमत्र विधीयताम् !

अथवा

भवति नवा कविता
तव नयनाकलिता
नामरूप सम्बोधन रहिता
भवति नवा कविता।

https://www.mjpruonline.com

https://www.mjpruonline.com

अथवा

रोटिका देवता दुःखदैन्यापहा
शुभ्रकान्त्यान्विताऽखण्डवृत्तान्विता।
एतु मे मन्दिरं सम्यगासेविता
चक्रवच्चालितेवान्नपूर्णाः रथैः॥

(ख) विरहव्यथाभरेण कथं नीयतां निशा,
केनापि पीडितेन कथं नीयतां निशा॥

अथवा

सज्जीभवन्तु समरे धृतधैर्यवीराः
सज्जीकरोतु रणतोरणवाद्यकेतून्।
गच्छन्तु युद्धकरणाय च वीर वालाः
इत्यादिदेश दलनाय रिपोर्दलानाम्॥

अथवा

धर्मधारणे सुखाय सर्ववर्गपोषणाय
भारतीय तैव सर्वतोऽवगाह्यताम्, न भारतं .....।
राष्ट्र एकता न खण्डिता विधीयतां
न भारतं विकीर्यतां सखे॥

https://www.mjpruonline.com

https://www.mjpruonline.com

2. अधोलिखित में से किसी एक गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए– 8

(क) एष एवाङ्गी करोति उत्तरं दक्षिणं चायनम्, एनेनैव सम्पादिता युगभेदाः, अनेनैव कृताः कल्पभेदाः एनमेव आश्रित्य भवति परमेष्ठिनः परार्द्धसंख्यया, असावेव चकर्ति, विभर्ति जहर्ति च जगत्, वेदाः एतस्यैव वन्दिनः, गायत्री अमुमेव गायति, ब्रह्मनिष्ठा ब्राह्मणा अमुमेवाहरहरूपतिष्ठन्ते। धन्य एष कुलमूलंश्री रामचन्द्रस्य प्रणम्य एष विश्वेषामिति उदेष्यन्तं भास्वन्तं प्रणमन् निजपर्णकुटीरात् निश्चक्राम कश्चित गुरुसेवन् पटु विप्रवटुः।

(ख) सम्प्रति तु म्लेच्छैर्गावो हन्यन्ते, वेदा विदीर्यन्ते, स्मृतयः समृद्यन्ते, मन्दिराणि मन्दुदरी क्रियन्ते, सत्यः पात्यन्ते, सन्तश्च संन्तापयन्ते सर्वमेतन्महात्म्यं तस्यैव महाकालस्येति कथं धीरधौरेयोऽपि धैर्यं विधुरयसि ? शान्तिमाकलय्याति संक्षेपेण कथय यवनराजवृत्तान्तम्। न जाने किमित्यनावश्यक मपि शुश्रूषते मे हृदयम् इति कथयित्वा तूष्णीमवतस्थे।

https://www.mjpruonline.com

https://www.mjpruonline.com

3. 'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्' सूक्ति की व्याख्या शिवराज विजय के पठितांश के आधार पर कीजिए। 6

अथवा

सिद्ध कीजिए कि शिवराज विजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है।

अथवा

शिवराज विजय के पठितांश का सार अपने शब्दों में लिखिए।

4. अधोलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग **100** शब्दों में दीजिए– प्रत्येक 3

(i) अभिराज राजेन्द्र मिश्र का सामान्य परिचय दीजिए।

(ii) प्रोफ़ेसर श्रीनिवास रथ की रचना 'विपत्रितेयं जीवनलतिका' का सार लिखिए।

(iii) प्रोफेसर राधाबल्लभ त्रिपाठी कृत 'रोटिका लहरी' कविता का भाव लिखिए।

(iv) प्रोफेसर रहस बिहारी द्विवेदी को प्राप्त पुरस्कारों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

https://www.mjpruonline.com

https://www.mjpruonline.com

(v) प्रोफेसर जगन्नाथ पाठक की 'कापिशायनी' नामक कविता संग्रह के आधार पर मानव और मदिरा में अभेद व्यक्त कीजिए।

(vi) प्रोफेसर बृजेश कुमार शुक्ल कृत 'जयतु मम स्वातन्त्र्य सरणि:' नामक कविता में किनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है ?

(vii) पं. विद्याधर दीक्षित का सामान्य परिचय दीजिए।

(viii) शिवराज विजय के आधार पर गौरसिंह की विशेषताएँ।

5. निम्नलिखित प्रश्नों के चार विकल्प दिये गये हैं। सही विकल्प चुनकर लिखिए। प्रत्येक 1

(i) अम्बिका दत्त व्यास विरचित शिवराज विजय है—

(क) नाटक

(ख) चम्पूकाव्य

(ग) उपन्यास

(घ) महाकाव्य

https://www.mjpruonline.com

https://www.mjpruonline.com

(ii) इनमें से शिवराज विजय का पात्र है—

(क) दुष्यन्त

(ख) गौरसिंह

(ग) उदयन

(घ) कञ्चुकी

(iii) इनमें आधुनिक कवि के रूप में गिने जाते हैं—

(क) विल्हण

(ख) कल्हण

(ग) धनञ्जय

(घ) प्रोफेसर जगन्नाथ पाठक

(iv) प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी की जन्म तिथि है—

(क) 2 जनवरी, 1947

(ख) 2 जनवरी, 1948

(ग) 5 जनवरी, 1946

(घ) 2 दिसम्बर, 1946

https://www.mjpruonline.com

https://www.mjpruonline.com

(v) 'जानकीजीवनम्' आधुनिक महाकाव्य के प्रणेता हैं–

(क) प्रोफेसर जगन्नाथ पाठक

(ख) अभिराज राजेन्द्र मिश्र

(ग) प्रोफेसर वृजेश शुक्ल

(घ) राधावल्लभ त्रिपाठी

https://www.mjpruonline.com

https://www.mjpruonline.com

https://www.mjpruonline.com
Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

https://www.mjpruonline.com